ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 150-154

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

# स्वामी विवेकानन्द : सांस्कृतिक क्रांतिकार एवं अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी

रीना वर्मा

E-mail: dr.kkchandra@gmail-com

Received- 12.02.2021, Revised- 17.02.2021, Accepted - 20.02.2021

***सारांश :*** *स्वामी विवेकानन्द एक पैगम्बर, समाज सुधारक एवं युवा प्रेरणा स्त्रोत के रूप में विख्यात हैं, वे एक दार्शनिक राष्ट्र प्रेमी व मानवतावाद के समर्थक थे, जो नैतिक दर्शन को समाज का आधार मानते थे उनके अनुसार हर धर्म हमें ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दर्शाता है एवं सभी व्यक्ति ईश्वर की संतान हैं हमारा मूल धर्म मानव जाति की सेवा करना, गरीब एवं पिछड़े हुए लोगों की सहायता करके उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन प्रदान करना है। हालांकि वे हिन्दू धर्म के प्रवक्ता थे लेकिन हिन्दु धर्म में प्रचलित बुराइयों जैसे जाति प्रथा, धार्मिक रीति रिवाजों व कर्म कांडो के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने कहा कि प्राचीन वैदिक संस्कृति जनसाधारण में कोई भेदभाव नहीं करती, ये बुराईयाँ बाद में जुड़ी हैं जिन्होंने समाज का विभाजन कर उसे वर्गों में बांट दिया है स्वामी जी ने कहा कि धर्म हमें तोड़ना नहीं अपितु जोड़ना सिखाता है। गरीब एवं पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए उन्होंने दिशा निर्देश निर्धारित किए। विवेकानन्द के अनुसार वर्तमान काल मानववाद का है जिसका प्रमुख केन्द्र मानव है। जिस पर हमें अपनी सभी गतिविधियाँ एवं सोच केन्द्रित करनी होगी। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास को सिर्फ आर्थिक उपलब्धियो के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक मानव के सर्वांगीण विकास के लिए इस्तेमाल करना होगा। उन्होंने अपने गुरू श्री रामकृष्ण परमहंस से अद्वैत वेदान्त की दीक्षा ली जिसके द्वारा सभी धर्मो को सत्य मानते हुए कहा गया कि मानव जाति की सेवा ही ईश्वर की प्रभावशाली सेवा है।*

**कुंजीभूत शब्द–** पैगम्बर, समाज सुधारक, युवा प्रेरणा, प्रवक्ता, प्रौद्योगिकी।

स्वामी विवेकानन्द के समयकाल में उद्योगवाद, पूंजीवाद व साम्राज्यवाद अपनी चरम सीमा पर था। अधिक प्रगति के दौर में धर्म व संस्कृति लुप्त होती जा रही थी। स्वामी जी ने अपने दर्शन ज्ञान से भौतिकवाद एवं संस्ति के बीच समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की एवं सोई हुई आत्माओं को जाग्रत किया। वे मानते थे कि धार्मिक आधार पर राष्ट्रवाद की मजबूत एवं टिकाऊ नींव का निर्माण किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था, वे 1863 में कलकत्ता के एक कुलीन परिवार में जन्मे थे। अपने वकील पिता से उन्होंने कुशाग्र बुद्धि एवं माता से आध्यात्मिक रूचि प्राप्त की। उनके घर में निरन्तर कथा वाचकों का आगमन रहता था जो पुराण, महाभारत एवं रामायण की विवेचना करते थे। नित्य प्रति भजन कीर्तन एवं कथा श्रवण कर नरेन्द्र नाथ के हृदय में धर्म और अध्यात्म के संस्कार चिन्हित हो गए। उनकी जिज्ञासा एवं प्रश्न पंडितों एवं कथा वाचकों को चकित कर देते थे। 1879 में वे प्रेसीडेंसी कालेज से प्रथम डिवीजन में उत्तीर्ण हुए। 1880 में केशवचन्द्र के सम्पर्क में आकर वे ब्राम्हण समाज आंदोलन से जुड़े। 1884 में कला स्नातक की डिग्री हासिल कर उन्होंने पश्चिमी दर्शन में परांगत प्राप्त की। हीगेल, काम्टे, जान स्टुअर्ट मिल एवं चार्ल्स डार्विन के अध्ययन के द्वारा उन्होंने स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं बन्धुत्व के सिद्धान्तों का ज्ञान हासिल किया। पश्चिमी दर्शन के साथ–साथ उन्होंने बंगाली साहित्य एवं संस्कृत ग्रन्थों में भी विद्वता हासिल की। उन्हीं दिनों वे श्री रामकृष्ण परहंस के सम्पर्क में आए एवं उनसे आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण कर नैतिक मानवतावाद एवं आध्यात्मिक आदर्शवाद के मूल्यो मे निपुणता हासिल करते हुए पश्चिमी विचारों एवं पूर्वी अध्यात्मवाद में समन्वय स्थापित किया। स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त समाज की स्थापना की जिसके द्वारा सदाचार, उदारता, नैतिकता, परोपकारिता एवं सभी धर्मिक समुदायों एवं पंथ के लोगों के बीच एकता के बंधनों को मजबूत बनाने के लिए जनकल्याण को बढ़ावा दिया गया। स्वामी विवेकानन्द ने सर्वधर्म एकता को प्रचलित किया उन्होंने कहा कि विभिन्न धर्म हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध व ईसाई मूल सिद्धान्त मानव धर्म एवं भाईचारे की शिक्षा देते हैं। इस्लाम धर्म जो कि सार्वभौमिक भाईचारे में विश्वास रखता है, हिन्दू धर्म के साथ मिलकर मानव सेवा में कार्यरत हो सकता है। अतैव इस्लाम व वेदान्त एक साथ वैश्विक आध्यात्मिक उन्नति के लिए कार्य करने में उद्धत हो सकते हैं। उन्होंने कहा 'हमें दृढ़ता से विश्वास है कि व्यवहारिक इस्लाम के बिना, वेदांतवाद के सिद्धांत चाहे कितने भी अच्छे व निराले क्यो न हों, विशाल मानवजाति के लिए पूरी तरह से महत्त्वहीन है। हमारी स्वंय की मातृभूमि के लिए दो महान व्यवस्थाओ हिन्दु धर्म व इस्लाम का संयोजन दिमाग व शरीर को संयोजन की तरह एक ऐसी उम्मीद है जो बड़ी से बड़ी शक्ति को हरा सकती है। मैं अपने मन की आखों से एक भविष्य देखता हूँ जिसमें वेदांत और इस्लाम के संयोजन से भारत इस अराजकता एवं संघर्ष से बाहर निकलकर गौरवशाली और अज्ञेय बनेगा। सभी धर्मो की अनुरूपता के विचारों ने स्वामी विवेकानन्द की संपूर्णता को उजागर किया।

## जातिवाद का खंडन एवं मानवतावाद–

स्वामी जी ने अपनी संस्था रामकृष्ण मिशन के द्वारा

*एसो0 प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, मौलाना आजाद इंस्टिट्यूट ऑफ ह्यूमन साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, महमुदाबाद (उ0प्र0), भारत*

**अनुरूपी लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

मानवता के धर्म का प्रचार किया। उन्होनें इन्सान की भलाई को ईश्वर की पूजा के साथ जोड़ा। प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर से जिस क्षेत्र में भी प्रचुरता दी है। उसमें वृद्वि तभी होगी, जब वे उसे उनसे बॉटेंगें, जिनके पास वह चीज नही है। जिनके पास धन की अधिकता है वे धन के द्वारा निर्धनों की सहायता करें, जिनके पास शिक्षा है वे अपने ज्ञान को अनपढ़ से बॉटकर उन्हें शिक्षित करें उनमें आत्मविश्वास की भावना को जागृत करें। जनसाधारण की आवाज ही ईश्वर की आवाज है। स्वामीजी ने भविष्यवाणी की थी कि भविष्य की दुनिया श्रमिकों की दुनिया होगी। फिर एक समय ऐसा होगा जब यह वर्ग हर देश में अपना उत्थान करेगा। ऐसा वे ब्राम्हणों या वैश्यों की विशेषताएं अपनाकर नहीं अपितु अपनी प्रकृति, अपनी विशेषताओं के बल पर वे प्रत्येक समाज में पूर्ण सर्वोच्चता प्राप्त करेंगें।

**हिन्दूओं का नवीनीकरण–** हिन्दु धर्म का नवीनीकरण करते हुए स्वामीजी ने अपनी दूरदर्शिता से ऐसे सिद्वान्त बनाए जिनसे जात–पात, रंग–रूप, भाषा शैली एवं इतिहास के मुद्दों पर बैठा देश भी अपनी संस्कृति की महानता को पूरे विश्व में स्थापित कर सका। उन्होंने हिन्दू धर्म में फैले ब्राम्हणवाद को दूर करने का प्रयास किया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि पुजारीतंत्र हिन्दू धर्म में एक कोढ़ की भांति फैल गया है। यह इतना निर्दयी हो गया है कि अपने ही भाइयों को नीचे गिराता है। इस पुजारीतंत्र की वजह से हिन्दु धर्म का पतन हुआ है। स्वामीजी के अनुसार प्राचीन वेदान्त दर्शन भेदभाव नहीं सिखाता है, न ही गरीबों का खून चूसने के लिए आवश्यक कर्मकांड करवाता है। पुजारी धर्म के नाम पर लोगों को डराता है एवं सजा देने की बात करता है जिस कारण भोले भाले लोग कर्मकांड करने के लिए धन जुटाने को मजबूर होकर अपना घर व खेत बेच देते हैं। पुजारी का वंशानुपात चलात है एवं कुछ विशेषाधिकारों के सम्पन्न होकर पुजारी आम जनता का शोषण करते हैं। स्वामीजी कहते थे कि इस विशेषाधिकारों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया जाना चाहिए एवं पुजारी वंशानुपात न होकर अपनी योग्यता के आधार पर नियुक्त किए जाने चाहिए। हिन्दू धर्म का पालन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पुजारी बनने का अधिकार है। पुजारी विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति न होकर राज्य का सेवक होना चाहिए, जो यदि कोई अनैतिक कार्य करे तो उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा सके, इस प्रकार पुजारी वर्ग को कानून के तहत लाना होगा तॉकि वे आम जनता को धर्म व अन्धविश्वास के नाम पर भ्रमित न कर सकें। लोग यह जान सकें कि पुजारी, परमात्मा एवं मनुष्य के बीच की कड़ी नही है अपितु मन्दिर की देखरेख के लिए नियुक्त राज्य का कर्मचारी है। धर्म यह नहीं है जो पुजारी अपने मंत्रों व श्रुतियों के द्वारा समझाते हैं, अपितु असली धर्म वह है जो मानवता को बढ़ावा दे सकें, उन्होंने कहा कि परमात्मा की प्राप्ति योग द्वारा आध्यात्मिक विकास से होगी न कि किसी कर्मकांड से। यदि कर्मकांड मानवता, नैतिकता के मूल्यों पर आधारित हो तभी उन्हें अपनाया जा सकता है किन्तु ईश्वर के नाम पर एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति द्वारा शोषण गलत है, पाप है। स्वामी जी ने हिन्दु धर्म में प्रचलित इस बात को गलत ठहराया कि अपने पिछले जन्मों के पापों के कारण व्यक्ति गरीब या पिछड़ी जाति में पैदा होता है। उन्होंने कहा कि वेदान्त लोगों को स्वयं पर विश्वास करने की प्रेरणा देता है। यह किसी भी पाप को नहीं पहचानता, सिर्फ गलतियों को चिन्हित करता है। वे मानते थे कि हर व्यक्ति के अन्दर परमात्मा की शक्ति मौजूद है, इसलिए हर व्यक्ति शक्तिशाली है। यदि ज़रूरत है, तो सिर्फ अपनी शक्ति को पहचानने की एवं ताकतवर बनने की। यदि आप कमज़ोर हैं, तो गैर जरूरी है, यदि आप शक्तिशाली है, तो समाज में सबको आपकी आवश्यकता है। अतः अपनी शक्ति को ढूँढें और मजबूत बनें।

**शिक्षा–** स्वामीजी एक नए भारत की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें समाज के हर व्यक्ति को शिक्षा के समान अधिकार हों एवं हर व्यक्ति शिक्षित होकर समाज की भलाई के लिए कार्य करे। उनका कहना था कि शिक्षा हर व्यक्ति के अन्दर निहित प्रभुता को निखारता है जिसके द्वारा हमारे चरित्र का निर्माण एवं बौद्विक विकास होता है तथा सामाजिक न्याय के गुणों का समावेश होता है। जिसके द्वारा हम समाज के हर वर्ग को ऊंचा उठाने का प्रयास कर सकते हैं। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति आत्मनिर्भर होकर आत्मज्ञान की ओर बढ़ता है एवं प्रेम, त्याग, सहनशीलता व पवित्रता के गुणों को धारण कर मानव की भलाई के लिए अग्रसर होकर सार्वभौमिक प्रेम को जागृत कर सकता है। व्यक्ति को अपने अर्न्तपटल को जागृत करके पूरे विश्व के संदर्भ में अपना विकास करना होगा। शिक्षा एक ऐसा रामबाण है जो समाज में फैली हुई बुराईयों को दूर करने की क्षमता प्रदान करता है। भारतीय समाज में दबे हुए लोगों की समस्या सिर्फ आर्थिक ही नहीं अपितु सांस्कृतिक भी है उनके दिमाग से हीन भावना को निकाल फेंकना अत्यंत आवश्यक है जिसके द्वारा उनके विकास को रोककर उन्हें दूसरों का दास बना दिया गया है, स्वामीजी ने इस बात का खंडन किया कि ज्ञान केवल विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों तक ही सीमित है। उनका मानना था कि वर्षों से दबे हुए लोगों को शिक्षा से वंचित रखकर समाज ने जो गलती की है, उसे सुधारा जा सकता है। शिक्षा के साथ–साथ उन्हें भारतीय संस्कृति एवं वेदान्त का बोध भी कराया जाए तॉकि वे समाज में अपना स्थान हासिल कर सकें।

**स्वाधीनता संग्राम–** स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं का आह्वान करते हुए उनके मन में देश भक्ति एवं राष्ट्रवाद की भावना जागृत करने का प्रयास किया। उन्होंने युवाओं को मजबूत चरित्र एवं स्वस्थ तनम न विकसित कर मातृभूमि के लिए

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

बलिदान देने पर प्रेरित किया। वे चाहते थे कि भारत का युवा वर्ग जाति धर्म या पंथ की भावना को छोड़कर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष करे। यह तभी संभव होगा जब वे ईमानदारी, समर्पण व दृढ़ संकल्प के साथ मातृभूमि की स्वतंत्रता के संघर्ष में शामिल हों। स्वामीजी के प्रयासों से भारतवर्ष को एक उद्देश्य एवं औपनिवेशिक ताकतों से लड़ने की मजबूती मिली। लोग स्वंय को एक दूसरे से जुड़ा हुआ महसूस करने लगे। स्वामी पूर्णात्मानंद द्वारा बंगाली भाषा में लिखित पुस्तक से ज्ञात होता है कि किस प्रकार स्वामीजी के विचारों ने हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों को प्रभावित किया था स्वामी विवेकानन्द का अपने देश और देशवासियों के लिए गहरा प्रेम ता विदेशी शासन की बेड़ियों से भारत को आजाद कराने का गहन इरादा उनके स्वाधीनता संग्राम को उजागर करता है। स्वामीविवेकानन्द ने कहा कि 'भारतीय मेरा भाई है, भारत की देवी और देवता मेरे भगवान हैं। भारत का समाज मेरे बाल्यावस्था का पालना है, मेरी युवावस्था को खुशी का बगीचा है, मेरे बुढ़ापे का पवित्र स्वर्ग वाराणसी है, भारत की मिट्टी मेरा उच्चतम स्वर्ग है, भारत का भला मेरा भला है। हे मॉ गौरी, जगजननी मुझे पौरूष प्रदान करने की कृपा करें। हे शक्ति की देवी, मेरी कमजोरियॉ दूर करों, मेरा कायरपन दूर करो और मुझे एक अच्छा इंसान बनाओ' इस प्रकार स्वामीजी ने अपनी देशवासियों का आह्वान किया एवं स्वाधीनता हासिल करने के लिए उन्हें प्रेरित किया। स्वामीजी के विचारों का प्रभाव न सिर्फ भारत में अपितु विदेशों में रह रहे भाारतीयों पर भी पड़ा। 1908 में आयरिश मुल्क के सभी धनी वकीलों से मिली आर्थिक सहायता से 'इंडियन हाउस' की स्थापना की गई जहॉ भारतीय मूल के लोग बैठकों द्वारा स्वामीजी के आदर्शों की चर्चा करते थे। न्यूयार्क में भारतीय छात्रों एवं लंदन के 'इंडियन हाउस' के लोगों ने स्वामीजी के ज्ञान एवं राष्ट्रवादी साहित्य का प्रसार करने के लिए उदार प्रेस कानूनों का फायदा उठाया। उत्तरोत्तर न्यूयार्क भारतीय आन्दोलन के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। स्वामीजी का मानना था कि भारत को अपनी युवा शक्ति को संचालित करके अपनी आजादी हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। महात्मा गॉधी ने स्वामी विवेकानन्द के बारे में कहा 'मैंने उनकी रचनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़ा है और ऐसा करने के बाद मेरा अपनी मातृभूमि की ओर प्रेम हजार गुना बढ़ गया है।'

**युवा शक्ति आह्वान–** स्वामीजी अपने जोशीले भाषण के द्वारा युवाओं को प्रोत्साहित करते थे 'उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।' स्वामीजी चाहते थे कि उनके शिष्य, मानसिक व शारीरिक रूप से मजबूत हों, वे उन्हें लोहे की मांसपेशियों, बिल्ली से बने दिमाग एवं मजबूत इरादे से सम्पन्न देखना चाहते थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र का भविष्य इन्हीं युवाओं के हाथ है। गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा, 'अगर तुम भारत को जनना चाहते हो तो विवेकानन्द को पढ़ो।' उनके भीतर सब कुछ सकारात्मक है, कुछ भी नकारात्मक नहीं। विवेकानन्द ने हमारे देश में एक महान संदेश का प्रसार किया जो किसी भी आचार से बंधा हुआ नहीं है। विवेकानन्द के शब्दों में व्यापक ढंग से युवा लोगों के चित को जगाया।6स्वामीजी ने भारतीयों में गर्व की भावना को जागृत किया।

निर्भीकता: स्वामी विवेकानन्द के अनुसार निर्भीकता ही प्रत्येक सफलता का कारण है। उनके जीवन की एक घटना ने उन्हें सदैव के लिए निर्भीक बना दिया। स्वामी जी अपने गुरू श्री रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के बाद काशी विश्वनाथ मन्दिर गए। जहां बहुत से बन्दर थे। उन्होंने अपनी जेबों में पुस्तकें भरी हुई थीं, जिससे बन्दरों को भ्रम हुआ कि वहां खाने की चीजें हैं। अतः बहुत से बन्दर उनके पीछे लग गए। बन्दरों को पीछे आता देख स्वामीजी डर गए और तेजी से चलने लगे। जब उन्होंने देखा कि बन्दर भी तेजी से चलने लगे हैं, तो वे दौडने लगे, उनके पीछे बन्दर भी दौड़ने लगे। तभी एक वृद्व भिक्षु ने आवाज लगाई 'भागो मत'। स्वामीजी रूककर पीछे मुड़े एवं बन्दर की ऑख से ऑख मिलाई तो बन्दर वापस भाग गए।'

उस दिन से उन्हें बोध हुआ कि यदि डर की ऑख से ऑख मिलाई जाए, तो डर अपने आप भाग जाएगी। स्वामीजी का प्रसिद्व चित्र जो लंबा अंगखा पहने एवं सिर पर साफा बांधे हुए हाथ पर हाथ रखकर किसी को घूरते हुए है, वह उसी घटना पर आधारित है। इस घटना के बाद स्वामीजी ने युवाओं को शिक्षा दी कि यदि हम विपति से भागेंगें तो वह और ज्यादा तेजी से हमारा पीछा करेगी, लेकिन अगर हम हिम्मत से उसका सामना करेंगें तो वह भग जाएगी। उन्होंने कहा कि समाज में जहॉ भी बुराई देखो उसका हिम्मत व हौसले से सामना करो। वे चाहते थे कि सभी देशवासी भय एवं कायरता के जाल से बाहर निकलें तथा शरीरिक एवं मानसिक शक्ति को हासिल करें सभी युवाओं में, चाहे वे किसी भी जाति के हों, क्षत्रियता की भावना जागृत हो और वे निडर होकर मातृभूमि एवं समाज की सेवा करें। वे भारतीयों को विदेशी बन्धनों के साथ विषयासक्ति एवं स्वार्थ भावना से भी मुक्त कराना चाहते थे।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक 'द डिस्कवरी ऑ इंडिया' में लिखा 'विवेकानन्द के पास अतीत का आधार था और उन्हें भारत की विरासत पर गर्व था। जीवन की समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण आधुनिक था। और वे भारत के अतीत एवं वर्तमान के बीच एक सेतु की तरह थे। उदास और पतित हिन्दु मानव के लिए वे संजीवनी के रूप में आए, उसे स्वावलंबी बनाा और उसको कुछ प्राचीन मूलों से जोड़ा। स्वामी जी का विचार था कि तकनीकि ज्ञान ने समाज के ढांचे में एक नकारात्मक प्रवृति पैदा कर दी है। युवा वर्ग आधुनिकता के प्रभाव में अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। वे नशा इत्यादि बुरी संगत में पड़ते जा रहे

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

हैं, जिससे उनके शरीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को हानि हो रही है। इस युवा वर्ग के जोश को एक नया मोड़ देना अत्यंत आवश्यक है, तॉकि वे अपनी शक्ति को सही दिशा में लगा सकें।

**अन्तर्राष्ट्रीय मिशन–** स्वामी विवेकानन्द चाहते थे कि भारत अपनी महान संस्कति द्वारा संघर्ष में डूबी हुई दुनिया को अपनी आध्यात्मिकता के ज्ञान से प्रेरित कर दें। दुखों से जलती हुई दुनिया को ऐसा उपदेश दें जिससे विश्व शान्ति स्थापित हो सके एवं पूरे विश्व के लोग खुशी और शांति से अपना जीवन यापन करते हुए व आध्यात्मिक उन्नति की ओर बढ़ते हुए परमात्मा की प्रगति करें। उनका कहना था कि भारतीय विरासत जिसको हमने वर्षों से संरक्षित किया हुआ है, उसे पूरे विश्व के साथ बांटे। शिकागो में 1893 में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में उन्होंने हिन्दू धर्म एवं भारतीय संस्कृति की महानता को उजागर किया। स्वामीजी का राष्ट्रवाद संकीर्ण राष्ट्रवाद न होकर पूरे विश्व की सभ्यताओं का उत्थान करने में अग्रसर था। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति की शक्तिशाली विचारधाराएं, नैतिक आचरण एवं महान विचार पूरे विश्व का आध्यात्मिक उत्थान एवं खुशी का आदान प्रदान कर सकती है। वे पूरे विश्व को प्रेम की लहरों में डुबा देना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द एक सार्वभौमिक गांव का स्वप्न देखते थे जहॉ जाति, धर्म, लिंग, सम्प्रदाय एवं क्षेत्र से ऊपर उठकर सभी व्यक्ति अपने नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए अपनी आत्मा का विकास करें एवं अध्यात्म की ओर अग्रसर रहे। वे पूर्व एवं पश्चिमी संस्कृति के बीच एक सेतु का कार्य करना चाहते थे। उन्होंने हिन्दू धर्म की व्याख्या साधारण रूप में करके पाश्चात्य समाज को अवगत कराया कि भारत का गरीबी व पिछड़ेपन के बावजूद विश्व संस्कृति में महान योगदान है। स्वामी विवेकानन्द भारत के सर्वप्रथम राजनीतिक दूत थे जिन्होंने पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति की महानता को स्थापित किया। पाश्चात्य सभ्यता की बुराइयों को उजागर कर उन्हें भारतीय संस्कृति में मौजूद योग व अध्यात्म के जरिए दूर करने की कोशिश की। दूसरी ओर भारतीय समाज में फैली असमानता एवं जातिवाद की बुराईयों को पाश्चात्य मानववाद के मूल्यों, स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं नारी सम्मान के आदर्शों द्वारा दूर करने की चेष्टा की। उन्होंने भारतीयों को, इन सभी मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी। इस प्रकार वे पूर्व व पश्चिमी संस्कृति को जोड़कर एक विश्व संस्कृति हासिल करने पर अग्रसर थे। सुभाष चन्द्र बोस ने कहा, स्वामीजी ने पूर्व एवं पाश्चात्य संस्कृति, धर्म, एवं विज्ञान, भूतकाल एवं वर्तमान में संतुलन बनाया। उनके विचारों के द्वारा हमारे देशवासियों को आत्मसम्मान, आत्म निर्भरता एवं आत्मबोध का ज्ञान होता है।[10]

**निष्कर्ष–** भारत जैसे देश में जहॉ धर्म, जाति, भाषा, बोली के आधार पर इतनी विविधताएं हैं, स्वामी विवेकानन्द के विचार आज भी उतने ही प्रसंगोचित एवं मूल्यवान हैं जाति व्यवस्था व पुजारीतंत्र के नाम पर आज भी दूरदराज के गॉवों में कट्टरता देखने को मिलती है। धर्म व साम्प्रदायिक दंगे समय–असमय होते रहते हैं। शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए साम्प्रदायिक सांजस्य की अत्यंत आवश्यकता है। स्वामीजी के विचार में किसी भी व्यक्ति को अपना धर्म परिवर्तन करने की आवश्यकता नही है। हर व्यक्ति दूसरे धर्म की अच्छाइयों को आत्मसात करे व अपने धर्म में उपजी बुराईयों को दूर करके उनका नवीनकरण करे। दूसरे धर्मों को स्वीकार करके सह–अस्तित्व की भावना से आगे बढ़ना आज के समय की असीम आवश्यकता है जिसकी शिक्षा श्री विवेकानन्द जी ने दी है। संस्कृति का पतन, नशे की लत, बुजुर्गों का सम्मान न होना, ये सभी बुराईयॉ भारतीय संस्कृति को प्रभावित कर रही हैं। इन बुराइयों को दूर फेंकने के लिए स्वामीजी के विचार जो युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत है, आज भी प्रासंगिक हैं। पाश्चात्य देश स्वामीजी के दर्शन का अनुसरण करते हुए अध्यात्म और योग की ओर आगे बढ़ रहे हैं। विदेशों में आध्यात्मिक दर्शन का ज्ञान देने के लिए भारतीय गुरूओं को आज भी आमंत्रित किया जाता है, बाल गंगाधर तिलक ने लिखा 'यह स्वामी विवेकानन्द ही थे जिन्होंने भारत के बाहर विभिन्न देशों में हिन्दु धर्म की गरिमा को स्थापित करने के मुश्किल काम को अपने कंधे पर उठाया था और उन्होंने अपने ज्ञान, वाकपटुता, मनोभाव एवं आंतरिक शक्ति के साथ उस को को मजबूत अंजाम दिया था। स्वामी जी ने हिन्दु धर्म का पुनरूद्धार करके धार्मिक संबंधों व सौहार्द को बढ़ावा दिया। सर्वधर्म समन्वयता के द्वारा शक्ति का संदेश स्थापित किया।

स्वामीजी का दर्शन युवाओं को आत्मविश्वास, निर्भीकता व उत्साह प्रदान करता है। जिसके द्वारा वे जात–पात के बंधनों से हटकर अपना जीवन यापन करते हुए आध्यात्मिक विकास की ओर आगे बढ़े हुए मानवता के मूल्यों को अपनाएंगें एवं स्वामी विवेकानन्द के सर्वधर्म एकता, पूर्वी एवं पश्चिमी सभ्यता का सामंजस्य, सार्वभैमिकता एवं मानवतावाद सदैव प्रासंगिक रहेंगें। श्री अरविन्दो घोष ने 'द दैनिक मैगजीन' में लिखा, 'विवेकानन्द एक महान शक्तिशाली आत्मा थे, मनुष्यों के बीच एक शेर थे, लेकिन जो अंतिम काम वे पीछे छोड़ गए है, वह हमें पूरे करने हैं। हम अनुाव कर रहे हैं कि ानका प्रभाव अभी भी बहुत विशाल रूप से काम कर रहा है। हम यह नहीं जानते कि कैसे, हम नहीं जानते कि कहॉ लेकिन किसी ऐसी चीज़ ने जिसने अभी तक आकार नहीं लिया है, कुछ सिंह जैसा विशाल, सहजकाति ने भारत की आत्मा में प्रवेश कर लिया है और हम कहते हैं ध्यान से देखो, विवेकानन्द अभी भी अपनी मातृभूमि एवं उसके बच्चों की आत्मा में जीवित हैं। नए भारत के सृजन में स्वामीजी का अनूठा योगदान जिसके द्वारा उन्होंने अपने साथी देशवासियों के मानस पटल को खोला ताकि वे गरीब और दलित वर्गों के प्रति अपना कर्तव्य निभा सकें, उनके समानता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

के विचार, शिक्षा एवं अवसर प्रदान किया जाना एवं सेवा के दर्शन का निरूपण सदैव महत्वपूर्ण रहेंगें।

**Notes**

1. Swami Vivekanand, The complete works Vol. IV, Advaita Ashram, Calcutta, 1966, p.625.
2. Swami Purnatmanda, "Swami Vivekanand and Indian freedom movement" Calcutta, Vdhodhan, 1988 in Bengali, p.6.
3. Swami Vivekananda, 'An appeal to his Countryman 'Modern India', available in Myads org/ nirmal/Lws/inspiring/essay 2. Html accesed on 16 July, 2012.
4. Fisher Tinc, Haralal, Indian Nationalism and the world forced, 'Transnational and diasporic dimensions of Indian freedom movement, journal of global history (2007) 2, p. 333 Cambridge University Press.
5. Swami Vivekanand in the eyes of great personalities (in Bengali) published by R.K.Mission Institutre of Culture, 1997, p. 17.
6. Bengali Magzine, Pravari Jayaistha 1335 / Bengali Samaj/may-june 1928, p. 286
7. Swami Vivekanand, Vani O Rachna Op at. 215.
8. Ibid, p. 216
9. Nehru, Jawaharlal, The Discovery6 of India, Kendon 1960, p. 338
10. Quoted in Mookerji, Nanda, Vivekanand on Subhas, R.K.M.
11. Quoted Swami Vivekanand in the eyes of Great personalities, Published by R.K. Mission Institute of Calcutta, 1994, p.18.
12. Sri Arobindo, Vol. II, Sri Aurobindo Birth Cenetenary liberary, Pondicherry, 1972, p. 37.

**REFERENCES**

1. Rolland Roman :Naren, the Beloved Disciple", The life of Rama Kirshna, Hollywood, California : Vedanta Press, pp. 169-193.
2. Basu, Shamia (2002) , Religious Revivalism as National Discourse Swami Vivekanand and New Hinduism in 19th Century Bengali, New Delhi: Oxford University Press.
3. Swami Vivekanand in the West New Discoveries (in Six volumes) (3ed) Kolkata, Advaita Ashram.
4. Dutta Krisahan (2003), Calcutta: A Cultural and Literary History Oxford; Signal books.
5. Dutt, Harshvardhan (2005), Immortal speeches, New Delhi: Unicom Books.
6. Badrinath, Chaturvedi (2006), Swami Vivekananda, The living Vednata, New York: Penguin.
7. Farquhar, J.N. (1915), Religious Movements in India London : Macmillan.
8. Clarke, Peter Bernad (2006), New Religious In Global Perspective, Routledge.
9. Masih Y. (1991) Introduction to Religious Philosphy New Delhi Moti Lal Banarsidas.
10. Virjananda, Swami, ed. (2006) (1910) the life of Swami Vivekananda by his eastern and Western disciples - in two volumes (sixth ed.) Kolkata Advaita Ashram
11. Arora V.K. (1968), "Communion with Brahmo Samaj" The Soul and political philosophy of Swami Vivekanand, Punthi Pustak.
12. Bharthi K.S. (1998), Encyclopedia of Eminent Thinkers: the Political thoughts of Aurobindoo, New Delhi Concept Publishing Company

*****